

# जल निकायों की गणना



जल निकाय से अभिप्राय उन संरचनाओं से है, जहाँ आवासीय या अन्य क्षेत्रों से हिमगलन, धाराओं, झरनों तथा वर्षा जल निकासी से जल एकत्र होता है। इनमें किसी धारा, नाले या नदी से परिवर्तित करके भंडारित किया गया जल भी शामिल है, परन्तु महासागरों, नदियों, झरनों, स्विमिंग पूलों, व्यक्तियों द्वारा बनाए गए ढके हुए जल के टैंक, कारखानों और अस्थायी जल निकायों को इस जनगणना से बाहर रखा गया है। परिगणना के दौरान जल निकायों के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में जानकारी एकत्र की गई जिसमें उनके प्रकार, स्थिति, अतिक्रमण की स्थिति आदि शामिल हैं। इसमें ग्रामीण और शहरी, दोनों ही क्षेत्रों में स्थित सभी जल निकायों को शामिल किया गया है, चाहे वे उपयोग में है या उपयोग में नहीं हैं।

विश्व की 18 प्रतिशत जनसंख्या भारत में निवास करती है, जबकि विश्व के कुल स्वच्छ जल संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत ही भारत में उपलब्ध है। देश में 80 प्रतिशत से अधिक जल का उपयोग कृषि में किया जाता है, जबकि शेष जल घरेलू और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए आबंटित किया जाता है। जलवायु परिवर्तन की मानसून पद्धति को प्रभावित करने के साथ, देश के जल निकायों की गुणवत्ता न केवल कृषि के लिए बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या हेतु पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। ये जल निकाय जल संतुलन बनाए रखने, बाढ़ आपदा से हानि को कम करने, जैव विविधता का

समर्थन करने, खाद्य सुरक्षा और आजीविका प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, परन्तु जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण के दबाव के कारण भारत जल की प्रचुरता वाले देश से धीरे-धीरे जल की कमी का सामना करने वाला देश बनता जा रहा है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि एवं शहरीकरण के कारण जल निकायों का क्षरण हुआ है। हमारे शहरों और कस्बों में देश के तीन प्रतिशत से भी कम जलाशय हैं, जिसके कारण देश के अनेक शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में जनमानस को शुद्ध पेयजल भी उपलब्ध नहीं है। देश में उपलब्ध जल संसाधन अत्यधिक प्रदूषित हो गए हैं जिससे सतही जल का 70 प्रतिशत भाग

मानव उपभोग के लिए, 'अनुपयुक्त' माना जाता है।

## जल निकाय का अर्थ

पृथ्वी की सतह पर उपलब्ध जल के एकत्रित स्वरूप को जल निकाय कहते हैं। यह महासागर, सागर अथवा छोटे तालाबों एवं कुंडों के रूप में हो सकते हैं। इनमें सतह पर प्रवाहमान जल के रूप में स्थित नदियों और नालों इत्यादि को भी शामिल किया जाता है।

## जल निकायों के प्रकार

जल पृथ्वी पर उपलब्ध सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से एक है और यह पृथ्वी पर विभिन्न रूपों में पाया जा सकता है। विभिन्न जल निकायों को उनकी गुणवत्ता जैसे: खारे

एवं स्वच्छ जल तथा जल निकाय के आकार जैसे: छोटे एवं बड़े जल निकाय के आधार पर कई श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं। जल निकायों की विशेषताएं उन्हें एक दूसरे से अलग करती हैं। महासागर, नदियाँ, तालाब, जलाशय आदि जल निकाय, पृथ्वी पर समस्त जीवधारियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हैं। विभिन्न प्रकार के निकायों/जलाशयों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित खंडों में किया गया है:-

## महासागर

महासागर पृथ्वी पर जल के सबसे बड़े पिंड हैं जो पृथ्वी की सतह के कम से कम 71 प्रतिशत भाग में फैले हैं। पृथ्वी

पर उपलब्ध समस्त खारा जल अंततः विश्व में विद्यमान महासागर में समाहित होता है। हालांकि, जिस तरह से हमारे महाद्वीपों को व्यवस्थित किया गया है, उससे विशिष्ट महासागर एवं घाटियों के बीच अंतर करना सरल हो जाता है। इस प्रकार इस अन्तर को देखते हुए प्रशांत महासागर सबसे विशाल महासागर है। इसके पश्चात हिंद महासागर, अटलांटिक महासागर, दक्षिणी महासागर और आर्कटिक महासागर आते हैं। मानव जाति, विभिन्न प्रकार से महासागरों पर निर्भर है, उदाहरण के लिए, हम भोजन प्राप्त करने व परिवहन के लिए इसका उपयोग करते हैं और जल चक्र को भी महासागर प्रभावित करते हैं।

### सागर

इन्हें मूलतः महासागरों के उप-वर्ग के रूप में जाना जाता है। महासागरों की तटीय पहुँच को जहाँ वे भूमि द्रव्यमान से घिरे होते हैं, समुद्र के रूप में जाना जाता है। समुद्र का सबसे सामान्य उदाहरण भूमध्य सागर है। इसके अतिरिक्त दक्षिण चीन सागर, कैरेबियन सागर और साथ ही बेरिंग सागर जैसे अन्य सागर भी लोकप्रिय हैं। इनमें से अधिकांश जल निकाय सीधे समुद्र से जुड़ते हैं। हालांकि, पृथ्वी पर विशेष खारे जल निकाय भी हैं और कैस्पियन सागर इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। इसके अलावा, यह खाड़ी की छोटी श्रेणियों में भी विभाजित होता है।

### 3. झील

ये जल के अंतर्देशीय निकाय हैं जो मीठे जल या खारे जल के साथ पाए जाते हैं। झीलें भी भूमि से घिरी होती हैं और कुछ कैस्पियन सागर को झील के रूप में वर्गीकृत भी करती हैं। झील और तालाब के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं है। हालांकि, झीलें भी काफी विशाल हो सकती हैं। उत्तरी अमेरिका की महान झीलें और रूस की बैकाल झील, वृहत्त झीलों का उदाहरण हैं। झीलों का निर्माण बहुत सारी प्रक्रियाओं से होता है, जिनमें से कुछ हिमनदों के कटाव के साथ-साथ ज्वालामुखी विस्फोट के अतिरिक्त



कश्मीर की डल झील में नौकायन।

नदियों को बाँधने से सम्बद्ध हैं।

### 4. नदियाँ और नाले

ये मूल रूप से गतिमान जल निकाय हैं। दूसरे शब्दों में, जो जल पृथ्वी की सतह पर प्रवाहित होता है, वह नदियों और जलधाराओं का निर्माण करता है। जल धाराओं को नदियों का छोटा रूप कहा जा सकता है। इनमें ताजा जल होता है जो नदियों और नालों के निरंतर प्रवाह के माध्यम से अन्ततः समुद्र में मिल जाता है।

नदियाँ जल के साथ-साथ ऊर्जा का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके अलावा, उनका उपयोग परिवहन उद्देश्यों और मत्स्य पालन के लिए भी किया जाता है। अफ्रीका में नील नदी व दक्षिण अमेरिका में अमेजन नदी विश्व की सबसे लंबी नदियाँ हैं। इसके अतिरिक्त मिसिसिपी नदी, कांगो, मैकेंजी आदि विश्व की प्रमुख नदियाँ हैं।

### 5. हिमनद/ग्लेशियर

हिमनद जल के हिम पिंड हैं तथा एक प्रकार के जल निकाय हैं जो जमी हुई नदियों की तरह धीरे-धीरे चलते हैं। सभी हिमनद, आइस कैप, ग्लेशियल आइस लाखों वर्ष पुराने हैं। वे पृथ्वी के लगभग 10 प्रतिशत भूमि क्षेत्र में फैले हैं और मीठे जल के प्रमुख स्रोत हैं।

### जल निकायों की गणना

जल शक्ति मंत्रालय ने पूरे भारत में जल निकायों की प्रथम जनगणना की है। जनगणना तालाबों और झीलों जैसे प्राकृतिक और मानव निर्मित जल

में जल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 2021 में 1,486 घन मीटर से गिरकर 2031 तक 1,367 घन मीटर होने का अनुमान है। 1951 की, जनगणना के अनुसार प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता 5,000 घन मीटर से अधिक थी। इस प्रकार, प्रदूषण रोकने और जल निकायों के संरक्षण और बहाली के लिए प्रभावी योजना और नीति तैयार करने के लिए जल निकायों पर एक ठोस और विश्वसनीय आंकड़ा बेस तैयार करने अनिवार्य है। आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन

**जल शक्ति मंत्रालय ने पूरे भारत में जल निकायों की प्रथम जनगणना की है। जनगणना तालाबों और झीलों जैसे प्राकृतिक और मानव निर्मित जल निकायों सहित भारत के जल संसाधनों की एक सूची प्रदान करती है। जनगणना के तहत 24.24 लाख से अधिक जल निकायों की गणना की गई है, जिनमें 23 लाख से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में और लगभग 69,000 शहरी क्षेत्रों में हैं। जल निकायों की संख्या के मामले में पांच राज्य पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और असम शीर्ष पर हैं, जिसमें उपलब्ध जल निकायों की संख्या देश के कुल जल निकायों का लगभग 63 प्रतिशत है।**

निकायों सहित भारत के जल संसाधनों की एक सूची प्रदान करती है। जनगणना के तहत 24.24 लाख से अधिक जल निकायों की गणना की गई है, जिनमें 23 लाख से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में और लगभग 69,000 शहरी क्षेत्रों में हैं। जल निकायों की संख्या के मामले में पांच राज्य पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और असम शीर्ष पर हैं, जिसमें उपलब्ध जल निकायों की संख्या देश के कुल जल निकायों का लगभग 63 प्रतिशत है। जनगणना ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानताओं और अतिक्रमण के विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डालती है। जनगणना देश के जल संसाधनों पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

केन्द्रीय जल आयोग द्वारा संकलित एक रिपोर्ट के आंकड़ों का हवाला देते हुए सरकार ने कहा कि देश

निकायों की गणना, संरक्षण, परिरक्षण और नवीनीकरण महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

जल निकायों की गणना की आवश्यकता

जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा सिंचाई जनगणना के लिए केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना के अंतर्गत पंचवर्षीय आधार पर लघु सिंचाई संरचनाओं की गणना की जा रही है। इसके अंतर्गत राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशों को शत-प्रतिशत केन्द्रीय सहायता प्रदान की जाती है। देश के इतिहास में पहली बार, जल शक्ति मंत्रालय ने 2018-19 में देश भर में प्रथम बार जल निकायों की गणना की। गणना ने भारत के जल संसाधनों की एक व्यापक सूची प्रदान की, जिसमें तालाब, टैंक, झील आदि जैसे प्राकृतिक और मानव निर्मित जल निकाय शामिल हैं। इनमें जल निकायों के अतिक्रमण पर



बनारस में गंगा नदी का एक मनोहर दृश्य।

आँकड़ों को एकत्र किया गया तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच असमानताओं, अतिक्रमण के विभिन्न स्तरों पर प्रकाश डाला गया तथा देश के जल संसाधनों में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि को पहचाना गया।

जल शक्ति मंत्रालय ने जल की कमी वाले क्षेत्रों की पहचान करने, जल संरक्षण की योजना बनाने, अतिक्रमण रोकने और जल के विवेकपूर्ण उपयोग एवं संरक्षण के बारे में नीतियाँ बनाने के लिए जल निकायों की गणना की। यह गणना छठी लघु सिंचाई गणना के साथ समन्वय करते हुए नियोजित की गई थी। लघु सिंचाई गणना और जल निकाय गणना दोनों से प्राप्त जानकारी अटल भूजल योजना को लागू करने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी। इस योजना के अंतर्गत, आँकड़ों का उपयोग ग्राम-पंचायत-वार जल बजट का आंकलन करने, वास्तविक जल सुरक्षा कार्यक्रम तैयार करने और जारी योजनाओं के बीच समन्वय के माध्यम से विभिन्न आपूर्ति/मांग पक्ष उपायों की योजना बनाने के लिए किया जा सकता है। लघु सिंचाई संरचनाओं और जल



गंगोत्री हिमनद।

निकायों से सम्बन्धित ब्लॉक/ग्राम पंचायत स्तर के आँकड़े, योजना कर्मियों को स्थानीय स्तर पर समुदाय को वास्तविक भूजल स्थितियों के बारे में जानकारी देने में सहायक सिद्ध होंगे।

**तालाब, पोखर, जलाशय, झीलें और अन्य जल निकाय**

औद्योगिक, मत्स्य-पालन, पेयजल और भूजल पुनर्भरण जैसे प्रयोजनों के लिए जल के भंडारण के वास्ते उपयोग किए जा रहे ऐसे सभी प्राकृतिक या मानव निर्मित जल निकाय इस गणना में शामिल किए जाने योग्य हैं, जिन्हें चारों

ओर चिनाई करके या अन्यथा परिवर्द्ध करके निर्मित किया गया हो। जल निकाय से अभिप्राय उन संरचनाओं से है, जहाँ आवासीय या अन्य क्षेत्रों से हिमगलन, धाराओं, झरनों तथा वर्षा जल निकासी से जल एकत्र होता है। इनमें किसी धारा, नाले या नदी से परिवर्तित करके भंडारित किया गया जल भी शामिल है, परन्तु महासागरों, नदियों, झरनों, स्विमिंग पूलों, व्यक्तियों द्वारा बनाए गए ढके हुए जल के टैंक, कारखानों और अस्थायी जल निकायों को इस जनगणना से बाहर रखा गया है।

परिगणना के दौरान जल निकायों के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में जानकारी एकत्र की गई जिसमें उनके प्रकार, स्थिति, अतिक्रमण की स्थिति आदि शामिल हैं। इसमें ग्रामीण और शहरी, दोनों ही क्षेत्रों में स्थित सभी जल निकायों को शामिल किया गया है, चाहे वे उपयोग में हैं या उपयोग में नहीं हैं। परिगणना में जल निकायों के सभी प्रयोजनों, जैसे; सिंचाई, उद्योग, मत्स्य पालन, घरेलू/पेयजल, मनोरंजन, धार्मिक और भूजल पुनर्भरण आदि को भी ध्यान में रखा गया है। जल निकायों की प्रथम परिगणना के दौरान, देश में 24,24,540 जल निकायों की गणना की गई है, जिनमें से 59.5 प्रतिशत (14,42,993) सरोवर, 15.7 प्रतिशत (2,92,280) जलाशय हैं, जबकि शेष 12.7 प्रतिशत (3,07,462) जल संरक्षण योजनाएं, चेक डैम, भूजल पुनर्भरण टैंक, झीलें और

अन्य जल निकाय हैं।

**जल निकायों की क्षेत्रीय भिन्नताएं**

विभिन्न प्रकार के जल निकायों से सम्बद्ध अग्रणी राज्य अलग-अलग हैं, जिसके लिए राज्यों की भिन्न स्थलाकृतियां उत्तरदायी हैं। परिगणना के अनुसार जल संरक्षण योजनाओं के अंतर्गत जल निकायों के निर्माण में महाराष्ट्र सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में अग्रणी है, इसके लगभग 93 प्रतिशत जल निकाय चेक डैम के रूप में हैं, जिससे पता चलता है कि राज्य के ग्रामीण भाग देश के किसी भी राज्य की

तुलना में जल संरक्षण योजनाओं पर अधिक निर्भर हैं। महाराष्ट्र में 97,062 जल निकायों में से 96,343 ग्रामीण क्षेत्रों में और केवल 719 शहरी क्षेत्रों में स्थित हैं। पश्चिमी बंगाल में सबसे अधिक तालाब और जलाशय हैं, जबकि आंध्र प्रदेश में सबसे अधिक तालाब और तमिलनाडु में सबसे अधिक झीलें हैं। देश में सबसे अधिक (0.35 मिलियन) जल निकाय पश्चिमी बंगाल के 24 जनपदों में हैं। इसके बाद आंध्र प्रदेश के अनंतपुर (50,537) और पश्चिमी बंगाल के हावड़ा (37,301) का स्थान है। व्यक्तियों के निजी स्वामित्व वाले जल निकायों की सबसे बड़ी संख्या वाला पश्चिमी बंगाल सूची में सबसे ऊपर है। इसके बाद असम, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और झारखंड का स्थान है। निजी स्वामित्व वाले अधिकांश जल निकाय या तो व्यक्तियों या किसानों के स्वामित्व में हैं, इसके बाद व्यक्तियों के समूहों और अन्य निजी निकायों का स्थान है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, 45 प्रतिशत से अधिक मानव निर्मित जल निकायों की प्रति निकाय मूल निर्माण लागत 50 हजार रुपये तक है।

### जल निकायों का अतिक्रमण

परिगणना में प्रथम बार जलाशयों के अतिक्रमण के बारे में जानकारी एकत्र की गई है। प्रतिवेदन में कहा गया है कि परिगणित जल निकायों के 1.6 प्रतिशत (38,496) निकायों का अतिक्रमण किया गया है, इनमें से 95.4 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और शेष 4.5 प्रतिशत शहरी

क्षेत्रों में हैं। उन सभी जल निकायों (अर्थात्, 24,516 जल निकायों), जिनके अतिक्रमण क्षेत्र का मापन किया जा सकता है, के 62.8 प्रतिशत जल निकायों में 25 प्रतिशत से कम क्षेत्र अतिक्रमित हैं, जबकि 11.8 प्रतिशत में 75 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र अतिक्रमित है। जल निकायों में सबसे अधिक अतिक्रमण सरोवरों का हुआ है, इसके बाद कृत्रिम तालाबों का स्थान है। सभी अतिक्रमित जल निकायों में से 67.6 प्रतिशत (26,005) सरोवर हैं, 21 प्रतिशत (8,082) कृत्रिम तालाब हैं, 4.5 प्रतिशत (1,745) जल संरक्षण योजनाएं/चेक डैम/भूजल पुनर्भरण टैंक हैं और शेष 6.9 प्रतिशत झीलें, जलाशय और अन्य जल निकाय हैं। जल उपयोगकर्ता संघ अतिक्रमणकारियों के प्रति सतर्क और सावधान रहकर अतिक्रमण को रोकने में सहायक रहे हैं।

### भंडारण क्षमता, पुनर्भरण की स्थिति और गहराई

देश के 24,24,540 जल निकायों की भंडारण क्षमता की जानकारी एकत्र की गई। इनमें से 50 प्रतिशत (12,12,283) जल निकायों की भंडारण क्षमता 1,000 से 10,000 घन मीटर के मध्य पाई गई है, 37.3 प्रतिशत (9,05,297) की भंडारण क्षमता 0 से 1000 घन मीटर के बीच है और शेष 12.7 प्रतिशत (3,06,960) की भंडारण क्षमता 10,000 घन मीटर से अधिक है। संक्षेप में कह सकते हैं कि कुल जल निकायों में से लगभग आधे की भंडारण क्षमता 1,000 से

10,000 घन मीटर के मध्य है।

केवल 21,39,439 जल निकायों के बारे में पूर्ण भंडारण क्षमता और पुनर्भरण की स्थिति की जानकारी एकत्र की गई, जिनमें तालाब, टैंक, झील और जलाशय सम्मिलित हैं। इन जल निकायों में से 41.1 प्रतिशत (8,86,197) में पूर्ण जलाशय स्तर तक की भंडारण क्षमता थी, 28.5 प्रतिशत (6,08,879) में तीन-चौथाई स्तर तक की भंडारण क्षमता थी, 16.4 प्रतिशत (3,50,948) में भंडारण क्षमता आधे स्तर की थी, जबकि शेष 37.7 प्रतिशत (2,93,415) में भंडारण क्षमता कम थी। पिछले पांच वर्षों के दौरान 48 प्रतिशत (10,26,759) जलाशयों में भंडारण क्षमता का लगभग 50% पुनर्भरण प्रति वर्ष पाया गया, 31 प्रतिशत (6,62,415) जल निकाय सामान्यतः भरे हुए पाए गए, जबकि 15.9 प्रतिशत (3,39,941) शायद ही कभी भरे जाते हैं और 5.1 प्रतिशत (1,10,324) जलाशय कभी नहीं भरते हैं।

### जल निकायों का अनुरक्षण और नवीनीकरण

जल निकायों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए उनका उचित अनुरक्षण और रख-रखाव आवश्यक है परन्तु अधिकांश जल निकायों (45.2 प्रतिशत) का अनुरक्षण कभी भी नहीं किया गया। 2009 से पहले 15.7 प्रतिशत जल निकायों का और 2018 के बाद केवल 3.6 प्रतिशत जल निकायों का नवीनीकरण किया गया। जिन जल निकायों का अनुरक्षण किया गया, उनमें से 62.9 प्रतिशत की लागत 50,000 रुपये तक थी जबकि 21.7 प्रतिशत के मामले में पिछली नवीनीकरण लागत 50,000 रुपये से 1 लाख रुपये के बीच थी।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 2010 के दशक के पूर्वार्द्ध से मध्य तक वैश्विक जनसंख्या के लगभग 1.9 बिलियन लोग जल की गंभीर कमी वाले क्षेत्रों में निवास कर रहे थे। वर्ष 2050 तक यह संख्या बढ़कर 2.7-3.2 बिलियन तक पहुँच जाने का अनुमान है। केंद्रीय जल आयोग (CWC) द्वारा प्रकाशित जल

एवं संबंधित आँकड़ों (2021) में उल्लेख किया गया है कि वर्ष 2025 तक प्रत्येक तीन में से एक व्यक्ति जल-तनावग्रस्त क्षेत्र में निवास कर रहा होगा। दुर्भाग्यजनक बात यह है कि तालाब, पोखर जैसे लघु जल निकाय जिन पर भारत में लंबे समय से लोग कृषि और घरेलू आवश्यकता के लिए निर्भर रहते थे, अब तेजी से लुप्त हो रहे हैं। इस परिदृश्य में, बढ़ते जल संकट को टालने के लिये जहाँ तक संभव हो जल निकायों में तत्काल वृद्धि करने की आवश्यकता है।

भारत की जल सुरक्षा में परम्परागत जलस्रोतों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। गाँव और कस्बों में कुएं, तालाब, जोहड़, झील, नाले आदि जल के मुख्य साधन रहे हैं। यह बात और है कि विकास और मानवीय स्वार्थ की पूर्ति के लिए जल निकाय या तो अतिक्रमण की भेंट चढ़ते गए या फिर पूरी तरह विलुप्त हो चुके हैं। इन जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करने के लिए केन्द्र सरकार ने जल संरक्षण और ग्रामीण विकास पर केंद्रित विभिन्न योजनाओं को इसके साथ समेकित किया है। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने वर्ष 2023 में भारत में प्रथम बार तालाबों, झीलों और दूसरे जलस्रोतों की गणना की है। इससे परम्परागत जलस्रोतों से जुड़ी नीतियों को प्रभावी रूप देने में सहायता मिलेगी। जल स्रोतों की प्रथम गणना के अनुसार पश्चिमी बंगाल में सबसे अधिक जल निकाय हैं। यहाँ तालाब और जलाशय सबसे अधिक हैं। आंध्र प्रदेश टैंकों और तमिलनाडु झीलों की संख्या में सबसे अग्रणी है। जल संरक्षण योजनाओं की संख्या व क्रियान्वयन में महाराष्ट्र आदर्श राज्य है।

सम्पर्क करें:

सुकुमपाल सिंह एवं सौरभ क्षेत्रीय मृदा प्रयोगशाला, श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) एवं पृथ्वी सिंह महाविद्यालय, धनौरी, हरिद्वार मो. 8126293240 ईमेल: sukrampalsingh049@gmail.com



उत्तर प्रदेश के रामपुर में प्रथम अमृत सरोवर।



## मैं देवदार का घना जंगल

मैं देवदार का घना जंगल  
मैं देवदार का घना जंगल,  
गंगोत्री के द्वार ठाड़ा,  
शिवजटा सा गुंथा निर्मल,  
गंग की इक धार देकर,  
धरा को श्रृंगार देकर,  
जय बोलता उत्तराखंड की,  
चाहता मैं सबका मंगल,  
मैं देवदार का घना जंगल...  
बहुत लंबा और ऊंचा,  
हिमाद्रि से बहुत नीचा,  
हरीतिमा पुचकार बनकर,  
खींचता हूँ नीलिमा को,  
मैं धरा के बहुत नीचे,  
सींचता हूँ खेत को भी,  
फूटते तब झरने निर्मल,  
मैं देवदार का घना जंगल...  
याद है पदचाप मीठी,  
गंग की बारात अनूठी,  
कोई नौना और ब्योली,  
कोई सिर पर फाग बांधे,  
कोई लिए लकुटी उमर की,  
बन घराती आस्था का  
गान गाता हूँ मैं मंगल,  
मैं देवदार का घना जंगल...

बाजुएं फैलाए लंबी,  
कर रहा मैं दिव्य स्वागत,  
रख रहा सब नाज नखरे,  
मोटरों का देख रेला,  
तीर्थ पर सब भोगियों को,  
हूँ परेशां सोचकर मैं,  
कब रुकेगा भोग दंगल,  
मैं देवदार का घना जंगल...  
दौड़ने को बड़ी गाड़ी,  
बहुत काली और चौड़ी,  
सड़क भोगी ला रहे हैं,  
तोड़ते नित हिमधरों को,  
झाड़ते नदी बीच मलवा,  
नष्ट करते शिवजटा को,  
काट डाला है मुझी को,  
मैं देवदार का घना जंगल...  
क्रोध में हिमराज योगी,  
दे रहा है नित्य झटके,  
सूत्र रक्षक भैजी-दीदी,  
कर रही गुहार सबसे,  
रोक लो विध्वंस जग का,  
न रचो खुद का अमंगल,  
चाहता मैं सबका मंगल,  
मैं देवदार का घना जंगल...



## पानी प्रणय पक्ष

आतुर जल बोला माटी से...  
मैं प्रकृति का वीर्य तत्व हूँ,  
तुम प्रकृति की कोख हो न्यारी ।  
इस जगती का पौरुष मुझमें,  
तुममें रचना का गुण भारी ।  
नर-नारी सम भोग विदित जस,  
तुम रंग बनो, मैं बनूं बिहारी ।  
आतुर जल बोला माटी से...  
न स्वाद गंध, न रंग तत्व,  
पर बोध तत्व है अनुपम मेरा ।  
भूरा, पीला, लाल रज सुंदर,  
कहीं चांदी सा रंग तुम्हारा ।  
जस चाहत, तस रूप धारती,  
कितनी सुंदर देह तुम्हारी ।  
आतुर जल बोला माटी से...  
चाहे इन्द्ररूप, चाहे ब्रह्मरूप, चाहे  
वरुणरूप,  
जो रूप कहो सो रूप मैं धारूं ।  
जैसा रास तुम्हे हो प्रिय,  
तैसी कहो करूं तैयारी ।  
करता हूँ प्रिया प्रणय निवेदन,  
चल मिल रचै सप्तरंग प्यारी ।  
आतुर जल बोला माटी से...

प्यारी मेरा नम तन पाकर,  
उमग उठेगी देह तुम्हारी ।  
अंगड़ाई लेगा जब अंकुर,  
सूरज से कुछ विनय करुंगा ।  
हरित ओढ़नी में ला दूंगा,  
बुआ हवा गायेगी लोरी ।  
आतुर जल बोला माटी से...  
नन्हे-नन्हे हाथ हिलाकर,  
चहक उठेगा शिशु तुम्हारा ।  
रंग-विरंगे पुष्प सजाकर,  
जब बैठेगी तुम मुस्काकर ।  
हर्षित होगी दुनिया सारी,  
कितनी सुंदर चाह हमारी ।  
आतुर जल बोला माटी से...  
जब देह क्षीण होगी प्रकृति की,  
यह चाहत ही आस बनेगी ।  
हरित ओढ़नी सांस बनेगी,  
मैं प्रवाह बन फिर बरसूंगा ।  
तुम फिर बन जाना कोख कुंवारी,  
यूं चलती रहेगी यारी हमारी ।  
आतुर जल बोला माटी से...

सम्पर्क करें:

अरुण तिवारी

146, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर,

दिल्ली-110 092

मो.नं. 9868793799

ई मेल: [amethiarun@gmail.com](mailto:amethiarun@gmail.com)